सनातन वेद सार

वेद वाणी

योगी अखिलेश
सकारात्मक विचार केंद्र

FIRST POCKET VED

ईश्वर सर्वज्ञ है
प्रकृति अनादि है
शूद्र का सत्कार करो
आत्मा कर्म फल भोगता है
स्त्री को वेद विद्या का अधिकार
राजा व सेनापति दुष्टों का संहार करें

POSITIVE THOUGHT CENTER
57ए- महालक्ष्मी नगर इंदौर म.प्र.
जम्बू द्वीपे, भरत-खण्डे भारत
संपर्क. 9827050009
Email: hathyogi@positivethoughtcenter.com
https://positivethoughtcenter.com
मुफ़्त (FREE) सनातन पुस्तक ज्ञान संग्रह वेबसाईट

प्रकाशन वर्ष 2023
विक्रम संवत 2080

विषय सूची
CONTENT

1.	ईश्वर	16-26
2.	आत्मा	27-32
3.	प्रकृति	33-37
4.	राजा का धर्म	38-46
5.	पुरुष कर्तव्य	47-55
6.	स्त्री कर्तव्य	56 -62
7.	विद्या	63-75
8.	योग	76-83
9.	ज्ञान	84-103

प्रकाशकीय

श्रुति वेदों को कहा जाता है और स्मृति धर्म शस्त्र को। श्रुति का अर्थ होता है सुनी हुई और स्मृति का अर्थ है याद किया हुआ और इसलिए ही रामायण, महाभारत, पुराण, गीता आदि स्मृति ग्रंथों को वेदों के नीचे का दर्जा हासिल है। चूंकि वेदों को पढ़ना एवं समझना कठिन था, इसलिए स्मृति ग्रंथों का अधिक निर्माण एवं प्रचलन हुआ और हम धीरे धीरे अपने बीज ग्रंथ वेदों को जान ही न सके।

हमने अनेक वर्षों के अटूट परिश्रम द्वारा **First Pocket Ved " सनातन वेद वाणी"** का निर्माण कर गागर मे सागर भरने का प्रयास किया है और हमारा उद्देश्य है प्रत्येक सनातनी अपने श्रुति वेद शस्त्र से भली भांति परिचित हो।

योगी अखिलेश
संस्थापक
Positive Thought Center

FIRST
POCKET VED

सनातन वेद सार

वेद वाणी

सप्तऋषि तारा मंडल

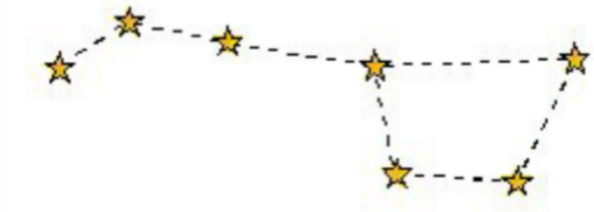

1.ऋषि विश्वामित्र गायत्री मंत्र कि उत्पत्ति एवं प्रथम वेद मंत्र दृष्टा।
2.ऋषि वशिष्ठ ऋग्वेद मंत्र दृष्टा एवं गायत्री मंत्र साधक।
3.ऋषि कश्यप के द्वारा देवता, असुर एवं नागों कि उत्पत्ति।
4.ऋषि जमदग्नि गौ वंश रक्षा हेतु ऋग्वेद में 16 मंत्री की उत्पत्ति।
5.ऋषि अत्रि ऋग्वेद के पांचवे मंडल के ऋषि एवं आयुर्वेदाचार्य।
6.ऋषि भारद्वाज ने यंत्र सर्वस्व कि रचना की। विमान वर्णन।
7.ऋषि गौतम वेद मंत्र दृष्टा। इनकी पुत्री अंजनी के पुत्र हनुमान हैं।

कश्यपोत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोथ गौतमः।
जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः॥
दहंतु पापं सर्व गृह्णन्त्वर्घ्यं नमो नमः॥

अर्थात सप्त ऋषि का प्रतिदिन जाप से समस्त पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं।

वेद वाणी है राज सुधा
स्वयं श्रवण करें राजेन्द्र
स्वाती नक्षत्र में प्रगटी देवी
होय पाठ सम्पन्न

माँ सरस्वती आपको बारम्बार प्रणाम है
आपकी ही प्रेरणा से मेरे जैसे तुच्छ प्राणी द्वारा
'वेद वाणी' लेखन कार्य सम्पन्न हुआ

योगी अखिलेश
सकारात्मक विचार केंद्र
इंदौर

भरत खंड

वैदिक ग्रंथों में हमारे देश का नाम भरत-खण्ड के रूप में आया है तथा एशिया महा द्वीप को जम्बूद्वीप के नाम से सम्बोधित किया गया है।

प्रत्येक पूजा से पूर्व "जम्बू द्वीपे, भरत-खण्डे नमस्तुते" नाम उच्चारित करना चाहिए।

वेद

वेद का प्रत्येक शब्द ईश्वर की वाणी है। "जो प्राणी मात्र को इच्छा रहित और निष्काम होकर ऐश्वर्य दे उसे 'ईश्वर' कहते हैं।

संपूर्ण प्रकृति ही ईश्वर द्वारा लिखा जा रहा निरन्तर धर्मग्रंथ है। सभी जीव एवं जीवन्त पेड़-पौधे उसके अक्षर हैं। हम मनुष्य भी इस क्रम में एक अक्षर के समान है, जिसे स्वयं ईश्वर,आत्मा होकर प्रतिक्षण लिख रहा है।

ईश्वर

"हे धरती के मनुष्य! मैंने तुम्हें ईश्वर की कल्पना इसलिए नहीं दी कि तू डर, भय अथवा लोभ के लिए उसकी उपासना करे। ईश्वर की कल्पना मैंने तुम्हें इसलिए प्रदान की कि तू भी धरती का ईश्वर बने। प्राणी मात्र के सुख केलिए अपने सुखों का परित्याग कर, धरती को पीड़ा रहित बनाये, धरती स्वर्ग सी सुखद हो तथा तू धरती का ईश्वर कहलाये।

मंदिर

वेद ने मन्दिर को एक समाधिस्थ योगी के रूप में दर्शाया है। पाल्थी के जेसा मन्दिर का चबूतरा, धड़ के जेसा गोल कमरा, सिर के जैसा गुम्बद, जटाओं के जूड़े जेसा कलश, आत्मा जैसी प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति तथा जीव के रूप में निमित्त सेवक। वेद में इसी कल्पना को सर्वत्र ग्रहण किया गया है।

यज्ञ

यज्ञ के रूप में भी मनुष्य के ही स्वरूप को दर्शाया गया है। आत्मा यज्ञ का अधिष्ठित देव आचार्य, प्राणवायु अर्थात उपाचार्य। आत्मज्वाला (ब्रम्हाग्नि) को यज्ञ की ज्वाला के रूप में दर्शाया गया है। शरीर को सामग्री के रूप में ग्रहण किया गया है और जीव ही यजमान है।

तू कर्म कर, प्रारंभ कर, यहां न कोई अनंत है
मै हूं जो बैठा जिस ध्वजा, प्रारंभ और वहीं अंत है

गर्व से कहो हम सनातनी हैं

योगी अखिलेश
प्रधान सेवक
सकारात्मक विचार केंद्र इंदौर

वेद वाणी

वेद सभी ग्रंथों से प्राचीन धर्म ग्रंथ है।
वेद का अर्थ है ब्रह्म वाक्य और ब्रह्म का अर्थ है ज्ञान प्रारंभ मे यह कठिन था कि प्रत्येक मनुष्य वेद ज्ञान प्राप्त कर सके। यह सिर्फ देवताओ, ऋषियों या प्रमुख क्षत्रीय राजा जैसे श्री राम अथवा प्रमुख ब्राह्मण जैसे रावण तक ही सीमित था।

वर्तमान मे भी लिखित वेद मौजूद हैं परन्तु आम व्यक्ति के लिए सभी वेदों का अध्ययन या उनका अर्थ कर पाना संभव नहीं है। यही विचार कर मूल वेदों का लघु अर्थ 'सनातन वेद वाणी' सार मे संग्रहित किया गया है।

सनातन वेद वाणी मानव कल्याण करे
योगी अखिलेश

ईश्वर

1. ईश्वर का निज नाम है
2. ईश्वर सर्वव्यापक है
3. ईश्वर सर्वज्ञ है
4. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है
5. ईश्वर ज्ञान स्वरूप है
6. ईश्वर सर्व शक्तिमान है
7. ईश्वर सर्व अंतर्यामी है
8. ईश्वर वेदों का प्रकाशक है
9. ईश्वर दुष्टों को दंड देता है
10. ईश्वर करुणामयी है
11. ईश्वर सृष्टि कर्ता धर्ता हर्ता है
12. ईश्वर अचल है
13. ईश्वर अनादि है
14. ईश्वर सृष्टि कि नियम व्यवस्था करता है
15. ईश्वर न्यायकारी है

16.ईश्वर अत्यंत सूक्ष्म है

17.ईश्वर अपने विषय में हुए उपासक के पाप को क्षमा कर देता है

18.ईश्वर बहुनामी है

19.ईश्वर एक है

20.ईश्वर अविनाशी है

21.ईश्वर के नियम अटूट है

22.ईश्वर चेतन है

23.ईश्वर ज्ञान प्रकाश है

24.ईश्वर बंधन रहित है

25.ईश्वर का विस्तार अनंत है

26.ईश्वर आत्मा का मित्र है

27.ईश्वर हर ज्ञान एवं कर्म का निमित्त कारण है

28.ईश्वर आत्मा का हित चाहता है

29.ईश्वर ने ये पृथ्वी आर्यों को दी है

30.ईश्वर प्रकृति में अनादि काल से सूक्ष्म रूप मे व्याप्त है

31.ईश्वर जगत की उपमा से स्वयं को मनुष्य के समक्ष प्रकाशित करता है

32.ईश्वर अनंत विद्या युक्त सत्ता है

33.ईश्वर अखंड है

34.ईश्वर अहिंसक है

35.ईश्वर पीड़ा से रहित है

36.ईश्वर पवित्र है

37.ईश्वर अजर है

38.ईश्वर अजन्मा है

39.ईश्वर नित्य है

40.ईश्वर निर्विकार है

41.ईश्वर अनंत शक्तिशाली है

42.ईश्वर सर्व बल कारक है

43.ईश्वर के तुल्य कुछ नहीं, न हुआ है और ना होगा

44.कुछ भी ईश्वर से महान नहीं है

45.ईश्वर सर्व द्रष्टा है

46.ईश्वर जन्म-मरण से रहित है

47.ईश्वर सर्व ऐश्वर्यमान है

48.ईश्वर अमर है

49.ईश्वर निराकार है

50.ईश्वर अहिंसक कर्मों की प्रेरणा करता है

51.ईश्वर इंद्रियातीत है

52.ईश्वर पूर्ण है

53.ईश्वर सर्व प्रेरक है

54.ईश्वर अपने कार्य हेतु किसी कि सहायता नही लेता

55.ईश्वर अनंत कर्म है

56.ईश्वर दुष्टों के पाप क्षमा नहीं करता

57.ईश्वर है या नहीं (नास्तिक संशय निवारण)

58.ईश्वर अस्त्र-शस्त्र द्वारा अभेद्य है

59.ईश्वर ही मुक्ति स्थान है

60.ईश्वर स्वयं भू है

61.ईश्वर त्रिकालज्ञ है

62.ईश्वर नित्य नूतन है

63.ईश्वर की शक्ति चेतन स्वरूप है

64.ईश्वर एकरस व्यापक है

65.ईश्वर सर्वश्रेष्ठ है

66.ईश्वर सत्यस्वरूप है

67.ईश्वर में अविद्या दोष नहीं है

68.ईश्वर समस्त पदार्थों से सूक्ष्म है

69.ईश्वर, आत्मा से भिन्न है

70.ईश्वर प्रकृति से भिन्न है

71.ईश्वर को भौतिक पदार्थों से पाया नहीं जा सकता

72.ईश्वर निष्काम है

73.ईश्वर जगत का निमित्त कारण है

74.ईश्वर के हाथ पैर आदि नही हैं

75.ईश्वर किसी विशेष स्थान पर नहीं रहता हैं

76.ईश्वर कर्मफल दाता है

77.ईश्वर जीव के हर गुप्त कर्म को जानता व देखता है

78.ईश्वर से कोई कहीं भी जाकर छिप नहीं सकता

79.ईश्वर कहां है

80.ईश्वर हर वस्तु के अंदर व्याप्त होकर सृष्टि को नियम पूर्वक चला रहा है

81.ईश्वर के गुण कभी घटते नहीं हैं

82.ईश्वर सत्यधर्मी है

83.ईश्वर अपरिमित है

84.ईश्वर निष्पाप है

85.ईश्वर से आत्मा की देशकाल से नहीं, बल्कि ज्ञान की दूरी है

86.ईश्वर विद्वानों के निकट है अविद्वानों से दूर है

87.ईश्वर अदृश्यमान है

88.ईश्वर सनातन है

89.ईश्वर में असंख्य धन है

90.ईश्वर कारण रहित है

91.ईश्वर समस्त लोको को नियम में ठहरा कर चलाता रहता है

92.ईश्वर सर्वव्यापक निराकार है

93.ईश्वर आलस्य निद्रा से रहित है

94.ईश्वर सहनशील है

95.ईश्वर सर्वेश्वर है

96.ईश्वर की व्यवस्था निश्चल एवं सबके लिए लिए समान है

97.ईश्वर के माता पिता नहीं हैं

98.ईश्वर कर्मानुसार फल देता है

99.ईश्वर राजाओं का राजा है

100.ईश्वर प्रत्येक जीव प्रकृति तत्व के भीतर विराजमान है

101.ईश्वर, सूक्ष्म से सूक्ष्म और महान से महान है

102.ईश्वर हर वस्तु के अंदर और बाहर है

103.ईश्वर आकाश की तरह व्यापक है

104.ईश्वर पापियों को कभी प्राप्त नहीं होता है

105.ईश्वर साकार नहीं है

106.ईश्वर अवतार नहीं लेता

107.ईश्वर के विभिन्न नाम उसके गुणवाच्य हैं

108.ईश्वर किसी वस्तु के ऊपर, नीचे या तिरछी दिशा में नहीं होता

109.ईश्वर हर जगह ओतप्रोत है

110.ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं है

111.ईश्वर षोडशी(16) कला वाला है

112.ईश्वर सबसे बड़ा है

113.ईश्वर तत्व को चलायमान मानना उचित नहीं

114.ईश्वर अभय है

115.ईश्वर अमर है

ॐ

आत्मा

1. आत्मा चेतन है
2. आत्मा अल्प सामर्थ्यवान है
3. आत्मा अनंत ज्ञान सामर्थ्य युक्त कभी नहीं हो सकता
4. जीवात्मा मृत्यु के पश्चात कहां रहता है
5. आत्मा अविनाशी है
6. आत्मा कर्म फल भोगता है
7. आत्मा अजर है
8. आत्मा में भय गुण है
9. आत्मा अनादि है
10. आत्मा सनातन है
11. आत्मा अजन्मा है
12. आत्मा को वाक शक्ति देने वाला ईश्वर है
13. शरीर आत्मा के ज्ञान कर्म भोग का साधन है

14.ईश्वर आत्मा को सत्य ज्ञान देता है
15.आत्मा के 3 शरीर होते है
16.आत्मा का कामना गुण है
17.आत्मा के साथ इंद्रिया आदि का संबंध
18.ईश्वर आत्मा का सामर्थ्य बल बढाता है
19.शरीर के अंदर आत्मा को ईश्वर का समन्वय
20.आत्मा में ज्ञान प्राप्त करने कर्म करने की इच्छा है
21.हमारा हर कर्म हमारे सूक्ष्म शरीर में संस्कारवत बना रहता है
22.पंचकोश
23.वृक्षों में आत्मा होती है
24.आत्मा शरीर प्राण नाड़ी मन आदि का नियंत्रक है

25.आत्मा शरीर से भिन्न है

26.जीवात्मा को उनमे शामिल होना जिनमे वेद ज्ञान मिलता हो

27.हे जीवात्मा बलिदानी योद्धा बन

28.हे जीव श्रेष्ठ माता पिता के घर जन्म लेने वाला बन

29.मृत्युके उपरांत सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ रहता है

30.आत्मा अमर है

31.आत्मा कर्म करने में स्वतंत्र है

32.आत्मा अल्पज्ञ है

33.आत्मा अणु परिमाण है

34.आत्मा का कोई लिंग नहीं होता है

35.आत्मा कर्म करता है ईश्वर फल देता है

36.आत्मा कभी भी ईश्वर तुल्य नहीं हो सकती

37.आत्माओं की संख्या अनंत है

38.आत्मा को शोकायुक्त ना करो

39.आत्मा की इच्छा स्वतंत्र है

40.आत्मा कर्म अनादि है

41.निंद्रा अवस्था में आत्मा की स्थिति

42.परग्रही जीवन

43.पुनर्जन्म

44.मोक्ष से पुनरावृति

45.सूर्य तारों पर जीवन

46.मृत्यु के बाद, आत्मा कर्मानुसार शरीर प्राप्त करने के लिए स्थान पर जाता है

47. मृत्यु उपरांत जीवात्मा 12 दिनों तक सूर्य आदि जगहों पर घूम कर नया शरीर प्राप्त करती है
48. आत्मा के अनंत जन्म हो चुके हैं
49. त्रेतवाद
50. हे जीव शरीर छोडते समय ॐ का स्मरण कर

ॐ

प्रकृति

1. प्रकृति अनादि है
2. प्रकृति जड़ (चेतना रहित) है
3. प्रकृति अविनाशी है
4. प्रकृति का विस्तार अनंत है
5. प्रकृति त्रिगुणात्मक है
6. प्रकृति जन्म रहित है
7. प्रकृति नित्य है
8. ईश्वर सृष्टी प्रकृति आत्मा के लिए बनाता है
9. जीवन उत्पत्ति
10. आत्मा के कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म होता है
11. आदि सृष्टी मे युवा अवस्था (स्वयंपोषी) में जीवों कि उत्पत्ति
12. ईश्वर सृष्टि आत्मा के सुख सामर्थ्य बढ़ाने के लिए बनाता है

13. ईश्वर सृष्टी आत्मा के उद्धार के लिए बनाता है
14. ईश्वर ने मनुष्य शरीर पुरुषार्थ करने के लिए बनाया है
15. मनुष्य शरीर महिमा का उपदेश
16. मानव शरीर रचना उपदेश
17. ईश्वर सृष्टि की रचना क्यों करता है
18. सृष्टि प्रवाह से है
19. कारण-कार्य भाव को जानने वाला ही विद्वान है
20. काल क्या है
21. ऊपर-नीचे दाएं-बाएं का अर्थ
22. उपादान कारण प्रकृति से बना कार्य रुप जगत अनित्य होता है
23. पदार्थ विद्या को प्राप्त करने का तरीका

24.ईश्वर ने सृष्टि को वेद वाणी से रचा है

25.ईश्वर ने सृष्टि को शब्दायमान रचा है

26.जगत सत्य है

27.ईश्वर ने सृष्टि को यज्ञ के लिए बनाया है

28.ईश्वर सृष्टि को अपनी उद्योग शक्ति व व्याप्त बल से बनाता है

29.सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति है

30.ईश्वर सृष्टि आत्मा के भोग और मोक्ष के लिए बनाता है

31.तंमात्राएं

32.सृष्टि परस्पर बनी हुई है

33.ईश्वर की कामना (इच्छा) सृष्टि निर्माण हेतु होती है

34.सृष्टि निर्माण और प्रलय

35.जो सूर्य चंद्र तारे ग्रह आदि इस सृष्टि मे है वैसे ही इससे पहले वाली सृष्टियों मे भी थे

ॐ

राजधर्म

1. राजा व सेनापति दुष्टों का नाश करें
2. चक्रवर्ती राजा के गुण
3. राजा व सेनापति का सैन्य धर्म
4. राजा कौन बनना चाहिए (गुण एवं कर्म)
5. राजा के मंत्री सभापति सभाध्यक्ष कौन और कैसे हो
6. जल सेना
7. वायुसेना
8. अधिक ब्याज नहीं लेना चाहिए
9. भ्रष्टाचार मत करो
10. जो युद्ध में सम्मिलत नहीं है उनको मत मारो
11. कवच
12. न्यायधीश के गुण कर्म
13. राजा और प्रजा का संबंध
14. बडे सभापतियों मंत्रियों के चमचे ना बनो

15. सबको रोजगार प्रदान करो
16. “पापी राजाओं” का नाश करो
17. राजपुरुष एवं असुर भाव को त्यागे
18. रानी के कर्तव्य
19. हत्यारे को सजा का प्रावधान
20. दुष्ट पापियों को दान देने वाले को दंड दो
21. व्यर्थ युद्ध करने वाले दुष्टों और राजाओं का नाश करो
22. चक्रवर्ती राजा बनने के लिए अन्यायकारी राजाओं का दमन मत करो
23. राजा को अपने प्रजा जनों से मिलते-जुलते रहना चाहिए
24. कौन सा राष्ट्र सुखी होता है
25. राजा को अपने पिच्छलग्गू लोभियों से दूर रहना चाहिए

26. राजा अच्छा है तो उसकी प्रशंसा करो अगर बुरा है तो उसकी निंदा करो, त्याग करो
27. राजदूत के गुण कर्म
28. अगर हमसे (आर्यों से) भी कोई पाप हो तो राजा उसको भी दंडित कर राज्य को सुचारू रूप से चलाएं
29. राजा की आवश्यकता क्यों
30. राजदंड व्यस्था
31. कौन राजा न बने
32. राजा को अपाहिज दुर्बल और अनाथों का संरक्षण करना चाहिए
33. मंत्री सभा अध्यक्ष शपथ ग्रहण
34. स्त्री मंत्रालय
35. युद्ध बंदियों के साथ अनुकूल व्यहार करो

36. दो राष्ट्र मित्रतापूर्वक अपने और दूसरे राष्ट्र कि न्यायिक स्थिरता रखने में मदद करें
37. उत्तम विदेश नीति
38. राजधर्म
39. सेनापति के गुण कर्म
40. राजसूर्य यज्ञ
41. निषिद्ध आयुध (शस्त्र) और अनुचित व्यवहार युद्ध में अनुचित हैं
42. इनका प्रयोग करने वाले दुष्ट राजाओं को दंड दो
43. युद्ध वही करना चाहिये जिससे संसार का उपकार हो
44. अन्यायकारी दुष्ट पापी दुष्कर्मी राक्षसों के नाश के लिए दंड

45. ईश्वर से प्रार्थना व उक्त सूक्त से राज दंड व्यवस्था लागू करना
46. अन्याकारी शोषक दुष्टों के विरुद्ध युद्ध करना आर्यों का कर्तव्य है
47. आर्य हो या अनार्य अगर आपके ऊपर यद्ध थोपे तो उनका भी नाश करो
48. मन्यु (बोध जन्य क्रोध) को धारण करो
49. राष्ट्रसभा राज्यसभा राजा केन्द्रीय परिषद का कार्य अधिकार व्यवस्था आदि का वर्णन
50. शोषक कौन
51. स्वराज
52. विश्व मे शांति स्थापित करो
53. अपना पराया देशी विदेशी कोई भी आपके ऊपर युद्ध करे हिंसा करे उनका नाश करो
54. कर (टैक्स)

55.राजा की सुरक्षा

56.राजतिलक उत्सव

57.युद्ध गीत

58.सेना व्यूह रचना

59.दुष्टों व शत्रुओ को लिखित रूप मे रखना चाहिए

60.प्रजा हिंसक को राजा दंड दे

61.व्यभिचारी को दंड दो

62.भ्रूण हत्या की सजा

63.सेना ध्वज रंग

64.राजा द्वारा अथिति सत्कार

65.निर्बल को राजा मत बनाओ

66.रात्री सुरक्षा सैनिक

67.चोर को दंड दो

68. प्रजा अपने राजा को सदा सुखदायक, शुभ कर्मों को करने के लिए प्रेरणा दिया करे
69. बलात्कारी को प्राण-दंड दो
70. शत्रु राजा अगर अपनी गलती मान कर युद्ध से पीछे हट जाए तो उसको मित्र बनाकर अपनी सेना वापस बुला ले
71. बहुत ज्यादा पापियों को धार्मिक राजा मिलकर पराजित करें
72. चार प्रकार के सैनिक
73. राष्ट्र का स्वरूप
74. वैदिक राष्ट्रगान
75. राजा व मंत्री प्रजा की संतान की तरह रक्षा करें
76. शत्रु को उत्साह देने वाला भी शत्रु होता है
77. शत्रु के उत्साही को दंड दो
78. युद्ध में किनको हानि नहीं पहुंचानी चाहिए

79. राजा और सेनापति के पास राज्य मे शस्त्रों की कमी नहीं होनी चाहिए
80. सेनापति पुरुषार्थी मनुष्यों को ना मारे
81. युद्ध स्थान मे घायल सैनिकों हेतु चिकित्सा का प्रबंध रखो
82. जो सगुण राजा मे है वह गुण राजा द्वारा प्रजा को भी धारण करवाना चाहिए

ॐ

पुरुष

1. सबका भला हो
2. सब मिलकर उन्नति करें
3. मित्रता
4. पाखंडी दुष्ट से मत डरो
5. मानव महासागरों मैं द्वीपों पर यात्रा करने वाला हो
6. आत्मरक्षा उपदेश
7. जो मुझे हिंसा नहीं करता उसको मै भी हिंसा न करूं
8. मूर्ख पापनी नारियों से दूर रहो
9. मूर्ख पापी पुरुषों से दूर रहो
10. माता पिता की संपत्ती संतान की
11. आलसी दुष्टों को ज्ञान ना दो
12. नमस्ते

13. मनुष्य शरीर मिलने पर कैसे कर्म करने चाहिये
14. दुष्टों का ताडन करो
15. सदा स्त्रियों के बीच रमण करने वाले कामी लोगों से दूर रहो
16. गर्भ हत्या पाप है
17. आर्यों को दुष्टों का नाश करना चाहिये
18. दुष्ट पापी करोडों भी हो तो सबको मारो
19. बिना कारण दूसरों पर हिंसा करने वाले दुष्टों को मारो
20. व्यभिचार करना गलत है
21. जुआ खेलना पाप कर्म है
22. किसी के धर्म जनित सुख को नष्ट मत करो
23. अहिंसक को मत मारो हिंसा मत करो
24. घास की तरह जड जमाते हुए आगे बढे

25. सभी मनुष्यों को सुख पूर्वक मिलकर एक मन होकर रहना चाहिए
26. दुष्ट मनुष्यों का संग मत करो
27. द्वेष भाव त्यागो
28. उत्तम वाणी को धारण करो
29. आर्य (श्रेष्ठ गुण कर्म युक्त) दस्यु (दुष्ट गुण कर्म युक्त)
30. दुष्टों का नाश करो उत्तम मनुष्यों की रक्षा करो
31. दुष्ट आचरण को त्यागो
32. अच्छे से अच्छा व्यवहार और बुरे से बुरा व्यवहार करना चाहिए
33. हिंसक मनुष्यों का साथ त्यागो
34. कुटिलता युक्त सामर्थ्य पदार्थ (किसी कुटिल का साथ कभी भी ग्रहण मत करो)
35. बंधुओं के अधिकार को मत छीनो

36.दुष्टों को मित्र मत बनाओ

37.शत्रु के ऋणी मत रहो

38.झूठे स्त्री-पुरुष का ताड़न करो

39.श्रद्धा (सत्य धारण)

40.छोटे बड़े भाइयों बंधुओं को एक विचार होकर उत्तम व्यवहार करना चाहिए

41.सभी मनुष्य बराबर है

42.अपाहिज विद्वान का सम्मान करो

43.छुआछूत खंडन

44.कामी लंपटो का त्याग कर

45.सत्यवादी धर्मात्मा असत्यवादी अधर्मात्मा

46.किसी के घर अचानक बिना आज्ञा मत जाओ

47.पराया धन ना लो

48.सबको आर्यव प्रदान करो

49.सबको विद्या ग्रहण का अधिकार है

50.मनुष्य बनो

51.धन मांगने वाले निर्धन कि मदद करो

52.हिंसकों कि हिंसा धर्म है

53.स्वार्थ त्यागो

54.अच्छे कर्म करते हुए जीवन जिओ

55.अपने साथ दूसरे मानवो का भी उपकार करो

56.सर्वहित कामना

57.डर को त्यागो

58.कुवासना कुसंस्कार का नाश हो

59.सात- कुमर्यादाय

60.जीवन मे सब कुछ उत्तम हो सुखद व कल्याणकारी हो

61.निर्बल कौन है

62.समाज को आगे बढाते हुए जिओ

63.ईर्ष्या मत रखो “हानियां”

64.स्वपन

65.पाप कर्मों से निव्रत

66.ऋणी मत रहो

67.काम क्रोध को काबू रखो

68.तृष्णा का त्याग कर

69.अधर्म पथ पर मत चलो

70.रजोगुण और तमोगुण का त्याग कर

71.हिंसा और दुष्कर्म न करने की प्रतिज्ञा

72.अपने प्रिय व परिजनों से प्रेम से वार्ता करें

73.शूद्र पर हिंसा करने वाले को दंड दो

74.स्त्री के हिंसक को दंड दो

75.ब्राह्मण के हिंसक को दंड दो

76.हिंसक दुष्ट को दंड दो मारो नष्ट करो

77.स्वयं शुद्ध होकर दूसरों को शुद्ध करो

78.झूठ मत बोलो

79.शुभ सत्य ज्ञान सुनो

80.मै विद्वानों का प्रिय बनू

81.मै सभी प्रजा का प्रिय बनू

82.मै पशुओं का प्रिय बनू

83.गरीब भूखों को भोजन करवाया करो

84.अत्याचार मत कर

85.शांति सूक्त

86.अधोगामी कौन है

87.असुर के लक्षण

88.सभी मनुष्यादी प्रजा के लिए कल्याणकारी करो

89.सत्य ज्ञान को समाज में कहो भले ही चाहे कोई बुरा कहे या भला

90.व्यर्थ की प्रतिज्ञा शपथ मत करो

91.मै शूद्र के प्रति अपराध बोध से मुक्त रहू

92.मनुष्य किन किन पदाथों विषयों ज्ञान विज्ञान आदि मे सिद्ध व सामर्थ्यवान हो

93.मै ब्राह्मण से प्रीत करूं

94.मै क्षत्रियों से प्रीत करूं

95.मै वेश्यों से प्रीत करूं

96.मै शुद्र से प्रीत करूं

97.विद्वान चारों वर्णों के मनुष्यों का सम्मान करें

98.मै हर तरह के अपराध बोध से पृथक रहूं

99.मै सभी प्राणियों को मित्र कि दृष्टि से देखूं

100.हम सभी एक दूसरे को मित्रता कि दृष्टि से देखें

101.गृहस्थ आश्रम

ॐ

स्त्री

1. स्त्री को शिक्षा का अधिकार
2. स्त्री को वेद विद्या का अधिकार
3. विवाह आयु (अवस्था)
4. कन्या विवाह हेतु कैसे वर का चयन करें
5. पुरुष विवाह हेतु कैसी वधू का चयन करें
6. स्त्री युद्ध में जाया करें
7. शिक्षा व ब्रह्मचर्य के बाद विवाह
8. स्त्री का अपहरण करने वाले को दंड दो
9. नियोग
10. पुरुष पत्नीव्रता रहे स्त्री पतिव्रता रहे
11. गर्भाधान संस्कार
12. गर्भाधान से पहले पुष्ट भोजन
13. मानव गर्भ काल
14. निसंतान दंपती को अपने वंश हेतु अपने गोत्र का ही बच्चा लेना चाहिए

15. मासिक धर्म मे संभोग नहीं करना चाहिए
16. यौन शिक्षा
17. धाई (दाई, परिचारिका, नर्स)
18. स्त्रियां अध्यापिका बने
19. कन्याओं को गुरुकुल मे स्त्रिया शिक्षा
20. दें
21. स्त्रियां भूविज्ञान को जाने
22. गृहस्थ स्त्री पत्नी तेरी संतान उत्पन्न करे
23. समान गुण कर्म स्वभाव वाली स्त्री से पुरुष का विवाह करना चाहिए
24. स्वयंवर विवाह
25. स्त्री खगोलशास्त्री बने
26. वृद्ध पुरुष का युवती स्त्री विवाह निंदनीय है

27.स्त्री व पुरुष अगर एक दूसरे को पसंद नहीं करते तो उनका विवाह मत करो

28.पति-पत्नी सदा आपस में सुख के साथ रहे

29.दस संतानों तक पैदा करने का उपदेश

30.प्रसवकाल विद्या

31.विवाह संस्कार

32.एक समृद्ध खुशहाल घर की परिकल्पना

33.उत्तम संतान उत्पन्न करो

34.एक पत्नी व्रत

35.गर्भ रक्षा करने का उपदेश

36.पुनर्विवाह

37.स्त्री को विदुषी स्त्रीयों में ही रहना चाहिये

38.हे स्त्रीयो सदा सुखी रहो

39.भाई-बहन के विवाह का निषेध

40.स्त्री कमजोर नहीं है

41.स्त्री विद्वान पुरुषों को ही अपना मित्र बनाएं

42.स्त्री को यज्ञ का अधिकार

43.जहां नारी (पत्नी) की पूजा होती है वही उन्नती होती है

44.ब्रह्मचारणी कन्या को आचार्या का उपदेश

45.स्त्री (पत्नी) पुरुष (पति) को एक दूसरे से व्यर्थ डरना या डराना नहीं चाहिए

46.दंपति सदा एक दूसरे के पूरक सहायतार्थ काम करें

47.स्त्री (पत्नी) न ताडने योग्य है

48.स्त्री (पत्नी) अपने पति को उत्तम गुणों का उपदेश दिया करे

49.पत्नी सदैव अपने पति को दुर्व्यवहार और पाप से दूर रखने का कार्य करे

50.सुशिक्षित नारी किसी से दब के ना रहे

51.स्त्री न्याय विद्या ग्रहण करें

52.स्त्री न्यायधीश बने

53.स्त्री कैसे पुरुषों को पति ना बनाएं

54.स्त्री राजनीति विद्या ग्रहण करें

55.स्त्री योग विद्या ग्रहण करें

56.पति पत्नी एक दूसरे के मित्र हैं

57.दूर क्षेत्रों मे विदेशो मे विवाह करना चाहिए

58.युवा अवस्था मे विवाह करना चाहिए

59.स्त्रियां वैद्य बने

60.स्त्री विद्धुत विद्या जाने

61.स्त्रियां युद्ध मे युद्ध वाहन को चलाते हुए युद्ध करें

62.विवाह विच्छेद की आधारभूत परिकल्पना

63.हे स्त्री तू घर की सम्राज्ञी (सब कुछ) बन

64.हे स्त्री सभागृह में बातचीत करने वाली बने

65.स्त्री भोजन बनाने की विद्या जाने

66.स्त्री कृषक विध्या जाने

67.स्त्री जीवन

68.स्त्री सिलाई विद्या जाने

69.स्त्री के कार्य

ॐ

विद्या

1. रसोईघर विद्या
2. पशुपालन पशुओं का यथा योग्य उपयोग
3. गौशाला (गाय पालन)
4. मांसाहार नहीं करना चाहिए
5. घोडा पालन
6. गाय न मारने योग्य है
7. लाभदायक जीवो पर दया करो
8. मानव आहार व पुष्टता का वर्णन
9. सूक्ष्मजीव
10. गौ हत्यारे को राजा दंड दे
11. लाभदायक पशुओं की हिंसा ना करो उनकी रक्षा करो
12. गाय गव्य पदार्थ
13. पीडादायक रोग व्याधि उत्पन्न करने वाले जीवों का नाश करो

14. हानिकारक जीवों को हटाओ
15. जीव-जंतुओं कि हिंसा करने वाले को दंड दो
16. चार दांतों वाले हाथी का वर्णन
17. भयंकर रक्त पिपासु जीवों का वर्णन
18. पिशाच (मांसाहारी मनुष्य) को अपने जलपान से दूर रखो
19. पिशाच (मांसाहारी मनुष्य) को दंड दो
20. घोडे को मत मारो
21. घोडे का मारने व मांस खाने वाले को दंड दो
22. मांस रक्त आदि से हवन नहीं करना चाहिये
23. व्यद्रभचारी मांसाहारी को दंड (ताडना) दो
24. गुरुत्वकर्षण बल

25.विद्या का प्रचार करना चाहिए

26.वेद सबके लिए है

27.विद्वानों से शंका एवं समाधान

28.वर्षा चक्र जल चक्र

29.पेड़ पौधे रात कि चाँदनी मे पुष्ट होते हैं

30.समाधि अवस्था मे वेद मंत्रों के अर्थों का ज्ञान लाभ

31.वेद ज्ञान अनादि है

32.वेद नित्य है

33.वेद के मंत्रों से ज्ञान उदय

34.व्यापार

35.प्रात: काल महिमा

36.अविद्या का नाश करो विद्या को बढ़ाओ

37.सबसे कमजोर का अस्तित्व

38.विद्वानों से अलग मत रहो

39.सुखद निंद्रा लो

40.योगिक सिद्धियाँ

41.दिन रात पृथ्वी पर सदा कही ना कही वर्तमान रहता है

42.विद्या महिमा

43.गणित विद्या

44.वेद विरुद्ध कार्य करने वाले का नाश होता है

45.पापी माता पिता का साथ मत दो

46.संतान माता पिता को तकलीफ ना दे

47.जल पवित्रकारक होता है

48.सूर्य और पृथ्वी को अलग अलग किया

49.ग्रहस्थों का विद्वानों के साथ सत्संग

50.योग के आठ अंग हैं

51. किला गढ गाँव सभ्यता निर्माण कैसे व कैसा हो
52. बुद्धि कैसी हो
53. मेखला बंधन (वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के कटिप्रदेश या मध्य भाग के चारों - ओर फैली हुई या स्थित हो)
54. केश औषधि वर्णन
55. सूर्य उदय होने के बाद तक सोने वाले मनुष्य का तेज छीण होने लगता है
56. अंडाशय के रोग से महिलाओां के शरीर पर ज्यादा बाल आने लगते है
57. शाला निर्माण
58. परमेश्वर को जाने बिना मोक्ष संभव नही
59. आदि सृष्टि में प्रथम उत्पन्न ऋषियों को वेद का ज्ञान प्रकट हुआ

60. चारों वेदों के नाम ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
61. वेद वाणी आदि मनुष्य पर प्रकट हुई
62. ईश्वर साक्षात्कार (समाधि) से पहले जानने वाले
63. जिस विधि से ऋषियों ने ईश्वर को जाना है वही एक विधि है अन्य कोई भी नही है
64. ब्रह्मचारी/ ब्रह्मचर्य महिमा
65. पृथ्वी कही से ऊची कही से नीची कही पर समतल है
66. पृथ्वी महाभूत (आकाश,वायु, अग्नि, मिट्टी और जल) का गुण गंध है
67. मोक्ष अवस्था
68. यज्ञ कुशल विद्वान सामान्य मनुष्यों को यज्ञ शिक्षा दे

69. पृथ्वी हाथ पैर आदि अवयवों से रहित है
70. वर्ण रहित मनुष्य
71. विभिन्न औषधि वर्णन
72. पृथ्वी गोलाकार है
73. परा पशयन्ती (वह शब्द जिनका उच्चारण ना हो जिन्हें कोई सुन ना सके) माध्यम वैखरी (जिनका उच्चारण हो जिन्हें कोई दूसरा सुन सके)
74. योगी सूक्ष्मवाणी आदि का ज्ञान प्राप्तकर्ता है
75. वेद ज्ञान महिमा
76. देव यज्ञ
77. वेद आदि ज्ञानवाणी आदि भाषा ज्ञान भाषा है
78. सबकी अपनी अपनी योग्यता है

79.हवन की राख का भक्षण

80.धरती पर ऋतु चक्र चंद्रमा के कारण व्यवस्थित होते हैं

81.सोम खाद्य अलग है सोम धारक अलग है

82.विद्धुत चुंबकीय सूर्य प्रकाश

83.सूर्य मे चुंबकीय क्षेत्र

84.पेड़ पौधे जानवरों से पहले पैदा होते हैं

85.चुम्बकत्व और वर्षा

86.अपने शरीर में ही रोगो से लड़ने वाली शक्ति बनाओ

87.यांत्रिक अस्त्र-शस्त्र

88.सूर्योदय दिशा

89.सूर्य प्रकाश चिकित्सा

90.अग्निहोत्र से रोगाणु आदि नष्ट-भ्रष्ट होते हैं

91.मानसिक दुर्भावना ईर्ष्या लोभ लालच आदि से मुक्ति

92.यज्ञ मे विघ्न डालने वाले को सजा दो

93.वाक विज्ञान

94.अंतरिक्षस्थ पिंडों को हाँथी घोड़े नहीं अपितु ईश्वर चलाता है

95.ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की उपासना मत करो

96.शल्य चिकित्सा

97.ईश्वर त्रिपाद समस्या हल

98.वानप्रस्थ आश्रम

99.जिस विषय मे आपकी रुचि है उसमे दक्षता प्राप्त करे

100.गुरु-आचार्य का शिष्य को वर्णन देना

101.आत्मा स्तुति (वीर रस)

102.योग बल स्व आकाश गमन

103.अग्निहोत्र पुरोहित योग्यता

104.जीवात्मा सतोगुण को धारण कर रजोगुण एवं तमोगुण को त्याग कर परमात्मा प्राप्ति कर सकता है

106.चंद्र ग्रहण

107.संस्कृत "शब्द"

108.योगाचार्य गुण कर्म

109.जागरूप पुरुषार्थी को ही सफलता मिलती है

110.जल औषधि वर्णन

111.तिल तेल औषधि

112.निर्धनता बहुत कष्टदायक है इसको पुरुषार्थ (लक्ष्य या उद्देश्य) से दूर करो

113.गौ दूध गौ घ्रत का सेवन करो

114.समाज मे स्त्री पुरुष इस तरह प्यार से रहे जैसे माता पुत्र को प्यार करती है

115.दिशाओां के नाम

116.चावल पकाना

117.अलग माता पिता से पैदा हुए भाई बहन मिलकर बंधु धर्म का पालन करें

118.वस्त्र आदि के पहनने का उपदेश

119.वेद ज्ञाता यदि वेद वाणी का ज्ञान अन्य को नहीं देता तो वो नष्ट भ्रष्ट हो जाता है

120.बहुत सारे भूगोल ग्रह हैं

121.यज्ञोपवीत

122.पर्वतों मे रहने वालों का सत्कार करो

123.वर्णशंकर का सम्मान करो

124.शूद्र का सत्कार करो

125.जंगली मनुष्य का आदर सत्कार करो

126.अस्त्र-शस्त्र बनाने वाले का सम्मान करो

127.गौ मछली और चीटी आदि को प्रेम हेतु दया हेतु अन्न दो

128.अन्य गृह के प्राणियों का भी सम्मान करो

ॐ

योग

1. योगाभ्यास के बिना खाली शब्द अर्थ खंडन-मंडन आदि से परमात्मा को नही प्राप्त किया जा सकता
2. सूर्य किरण संसार को पुष्ट करती है
3. विद्वानों को एक साथ मिलकर सत्य सिद्धांतों पर स्थिर रहना चाहिए
4. अतिथि तीन दिनों तक ही घर मे रुके
5. सत्य तक पहुचने के तरीके
6. सुई
7. हर जगह का जल शुद्ध रखो
8. बादलों के विभिन्न प्रकार
9. वैदिक महीनों के नाम चैत्र , वैशाख, ज्येषठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपक्ष(भादव), आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन

10.अपना उद्धार स्वयं करो

11.ऋतु अनुसार सुख हेतु रंगों का चयन

12.भैंस (शब्द)

13.विभिन्न पशु पक्षी के व्यवहार व गुण व उनका यथा योग्य उपयोग

14.पाँच भूतों के नाम आकाश वायु जल अग्नि पृथ्वी

15.नदि पहाड़ आदि पर एकांत जगह पर योगाभ्यास करना चाहिए

16.मनुष्य जीवन के यज्ञ (कर्तव्य)

17.विद्धुत का अति सूक्ष्म विज्ञान

18.मनुष्य के गुण

19.जो व्यक्ति बुद्धीहीनों को बुद्धिमान व नीच वर्णों को उच्च वर्ण करते है वही महान विद्वान होते है

20.हे ईश्वर व राजन हमारे बीच उत्तम प्रश्न करता व उत्तम उत्तर दाताओ को उत्पन्न कीजिए

21.धर्म का अर्थ

22.चार युगों के नाम सत्ययुग त्रेतायुग द्वापरयुग कलियुग

23.सूर्य पृथ्वी से पहले उत्पन्न होता है

24.ईश्वर व गुरुजनों से मुझे उत्तम बुद्धि प्राप्त हो

25.प्रातकाल औषधियों का रस पियो

26.संतानो कि हत्या मत करो

27.गाय का घी पिया करो

28.ईश्वर हमारी किस तरह मदद करता है वह कैसे कब हमारी बुद्धि मे शुभ गुण कर्मों

कि प्रेरणा करता है इसको आत्मा नहीं जानता

29. मनुष्य को पदार्थों का भोग त्याग भाव से करना चाहिए
30. मनुष्य निष्काम कर्म करता हुआ 100 वर्ष जीने कि कामना करें
31. जो मनुष्य जड़ प्रकृति कि उपासना करते हैं वह अंधकार मे गिरते हैं
32. बसंत ऋतु
33. ग्रीष्म ऋतु
34. वर्षा ऋतु
35. शरद ऋतु
36. हेमंत ऋतु
37. शिशिर ऋतु

38. बिना विचारे वेद को धारण करने से प्रजा नष्ट भ्रष्ट होती है
39. वेद को यथावत विचार करके ग्रहण करें
40. जो व्यक्ति वेद वाणी को कुमार्ग हेतु उपयोग करता है वह युवकों का हत्यारा होता है
41. वेद ज्ञान सुपात्र एवं जिज्ञासुओ को सिखाना चाहिए
42. पापी भ्रष्ट कामी लंपत मनुष्य वेद वाणी को ग्रहण करके ही समाज हित नहीं कर सकता है
43. वेद ज्ञान कुपात्रों को मत दो
44. वेद को जानकर जो कुमार्ग पर चलता है वो जल्दी ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है

45. वेद विद्या से जलने वाला नष्ट भ्रष्ट हो जाता है
46. अब्रह्मचारी वेद वाणी का संपूर्ण लाभ नहीं ले सकता
47. ब्रह्मचारी को सताने वाले क्षत्रीय का सर्वनाश हो जाता है
48. ब्रह्मचारी विद्वानों को सताने वाले क्षत्रीय को दंड दो
49. अधर्मी मनुष्य को उसका फल इसी जन्म मे या अगले जन्म मे मिलता है
50. ब्रह्मचारी विद्वानों के हानिकारक अपराधी व नास्तिकों को दंड दो
51. मानसिक वाचनिक दैहिक 3 स्तर के पाप-पुण्य कर्म होते हैं

52. जिन कर्मों से ईश्वर का अनुमान होता है वह कार्य ईश्वर के द्वारा किये होते हैं
53. शून्य (0) शब्द
54. आरामदायक वस्त्र पहने
55. अतिथि सत्कार का फल
56. अतिथि सत्कार कैसे करें
57. झूठे पाखंडी पापी अतिथि का तिरस्कार करो
58. पुरुषार्थ हेतु आत्मस्तुति

ॐ

ज्ञान

1. भूतकाल मे भविष्य भविष्य मे भूतकाल रखा हुआ है
2. आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक सुख-दुख
3. पितृ यज्ञ
4. पितृ ऋण
5. पितृ का हमारे प्रति हमारा पितृ के प्रति कर्तव्य
6. अन्न को नष्ट मत करो
7. वेद कि मर्यादा से बाहर रहने वाले को मोक्ष नहीं मिलता
8. स्वतंत्र जहा चाहो विचरण करो
9. पितृ कर्तव्य उपदेश
10. शुद्ध जल से भरी हुई कृतिम नालिया बनाओ

11. नक्षत्र 28 (अश्विनी मृगशिरा आश्लेषा हस्त अनुराधा उत्तराषाढ़ा पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद भरणी आर्द्रा मघा चित्रा ज्येष्ठा अभिजीत कृतिका पुनर्वसु पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी स्वाति मूल धनिष्ठा रेवती रोहिणी पुष्य विशाखा पूर्वाषाढ़ा शतभिषा श्रवण)
12. शुद्ध छीक अशुद्ध छीक
13. स्वर्ण धातु महिमा
14. तर्क द्वारा ईश्वर का अंगीकार करो
15. उपनिषद शब्द
16. आशा महिमा आशावान रहो
17. शरीर को स्वस्थ रखो
18. शास्त्रार्थ
19. मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ है

20. ज़िंदगी से दुखी हारे हुए नकारात्मक निराशावादी मनुष्य के लिए ईश्वर का उपदेश
21. सामाजिक शास्त्र समाज मे भले बुरे का विधान
22. घोड़ा चाहिए तो अस्तबल मे जाओ गौशाला मे नहीं
23. जूते
24. धूप से चलने वाले वाहन यंत्र
25. सुखी जीवन हेतु किसान का अनुसरण करो
26. अग्निहोत्र शुद्धि करता है
27. यज्ञ सदा सर्वहित हेतु करो
28. जैसा करोगे वैसा भरोगे
29. खरीदारी व्यवस्था

30.सूर्य से सीधे नजरे मत मिलाओ

31.अंतरिक्ष गमन करो

32.माता का संतान से वात्सल्य

33.माता पिता संतान को विद्या प्राप्ति के लिए आदेश दे

34.तर्क से ही विद्या प्राप्त होती है

35.यज्ञ संसार को पवित्र करो

36.विद्यार्थियों को भोजन बनाना सिखाओ

37.माता-पिता संतान को गलत शिक्षा व कष्ट ना दे

38.संतान माता को साथ रखे

39.माता से ज्ञान प्राप्त करो

40.माता को मन से भी कष्ट मत दो

41.विद्वानों के रसोइए

42.न्यायधीश के न्याय का विरोध आचरण ना करो

43.सूर्यास्त सूर्य को देखना चाहिए

44.हे वैद्य लोग आपस मे औषधियों हेतु ज्ञान चर्चा कर रोगों का निदान करो

45.सभी मनुष्य को शस्त्र धारण करना चाहिए

46.मुंडन चूड़ाकरण संस्कार

47.बालक के दात निकलना उसका आहार आदि अन्नप्रासन संस्कार

48.प्राण अपान व्यान समान वायु

49.उपनयन संस्कार

50.सूर्य से गायत्री आदि छंद कंपित है

51.अंत्येष्ट संस्कार

52.हे वैद्य बांझपन रोग को दूर करो

53.धन धन को कमाता है

54.अध्यात्म

55.गुरुकुल, गुरु शिष्य संबंध आचरण व्यवहार कर्तव्य आदि

56.आयुर्वान बनो

57.वर्ण व्यवस्था गुण कर्म प्रधान होती है

58.वेद चार हैं

59.पुरुषार्थ के बिना लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकती पुरुषार्थी बनो

60.पाप कर्म को बुद्धि से दूर करो

61.दान, दान महत्व

62.युवा पुरुषार्थ

63.मेघ विद्या ज्ञान

64.उपदेशों को तर्क वितर्क कर मनन कर के उसको धारण करो

65. बिना ज्ञान अर्जित किये व्यर्थ तर्क मत करो
66. नशीले पदार्थों के बाद वैद्य परामर्श का सेवन मत करो
67. शूद्र कुल में उत्पन्न बालक पढकर द्विज वर्ण धारण कर सकता है
68. विद्या किसको प्राप्त होती है और किसको प्राप्त नहीं होती
69. व्यर्थ संवाद प्रश्नोंत्तर दान-रहित मूर्ख व्यक्ति से दूर रहो
70. सपरिवार सुखी रहो
71. जटाजूट ब्रह्मचारी
72. ज्ञानवाणी वेद मंत्र सर्वत्र है
73. बिना चोटी वाले ब्रह्मचारी

74.दो लकड़ियों को आपस मे रगड़ कर अग्नि प्रकट करना

75.ग्रहण करने योग्य विद्या

76.वसु 24 से 40 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करने वाले हैं

77.सन्यास आश्रम सन्यासियों के गुण कर्म

78.सन्यासी कि सेवा सत्कार करना चाहिए

79.लिपि विद्या

80.विदशों मे जाकर धन कमाओ

81.रूद्र जो 44 वर्ष ब्रह्मचर्य हैं

82.आदित्य जो 48 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करते हैं

83.अतिथि गुण कर्म

84.कुत्ता पालन

85.भाप शुद्ध जल होता है

86.बुद्धि का उपयोग सदा श्रेष्ठ कर्मों में करें

87.उपासना काल

88.आत्म नियंत्रण

89.यज्ञकर्ता वेद देवता ब्रह्मा

90.सबको शिक्षित करो

91.ईश्वर प्राप्ति समाधि मे बाधक पाप कर्म

92.मोक्ष पद ब्रह्मानन्द सर्वोपरि है कोई इसके तुल्य नहीं

93.सूर्य का रंग सफेद है

94.किसी भी भाषा वाणी मे ईश्वर प्रार्थना कर सकते हैं

95.प्राचीन और नवीन दोनों पथों को विद्वान के सानिध्य में ग्रहण करो

96.ऋषि गुण कर्म धर्म

97.कर्मयोग कर्मयोगी गुण कर्म

98.ज्ञान योग ज्ञान योगी के गुण कर्म

99.ईश्वर से प्रार्थना मंत्र

100.ईश्वर स्तुति मंत्र

101.आचार्य गुण कर्म धर्म

102.मन इंद्रिय

103.मन एक है

104.चक्षु इंद्री

105.कान इंद्री

106.33 देवता

107.ब्रह्मचर्य पालन लाभ

108.ईश्वर उपासना का फल

109.वेद मंत्रों के तीन अर्थ

110.स्वाहा

111.शुभ कर्मों के बिना ईश्वर उपासना नही होती

112.संवाद प्रश्नोत्तर दान रहित मूर्ख व्यक्ति से दूर रहो

113.मनुष्य वेदों को लुप्त ना होने दे

114.ज्वार भाटा चंद्रमा के कारण

115.व्यापक-व्याप्य संबंध

116.वेद ज्ञान अनंत है

117.वेद ज्ञान किस तरह प्रकट होता है

118.मनुष्य अपनी इच्छा बुद्धि अनुसार कोई भी रोजगार कर्म कर सकता है

119.ईश्वर कि उपासना

120.शरीर कर्म-फल भोगने के लिए भोग साधन

121.योग उपासना

122.वायुयान विद्या

123.अग्निहोत्र हवन यज्ञ

124.एक ईश्वर कि उपासना

125.चार वर्णों का विभाग

126.आठ वसु

127.बिजली

128.सोमरस

129.कर्मफल व्यवस्था

130.तकनीक का विकास करो

131.प्राणायाम

132.धर्म

133.ज्योतिष

134.पहिया विद्या

135.आकाश तत्व का गुण शब्द है

136.मृत्यु का समय निश्चित नहीं होता

137.अस्त्र-शस्त्र विद्या

138.मोक्ष किसको मिलता है

139.अहिंसित यज्ञ

140.विद्वान अतिथि का सेवा सत्कार कैसे करे

141.नाव पनडुब्बी विद्या

142.वैद्य के गुण कर्म

143.कुत्ते को शिक्षा

144.जैविक खेती

145.दस दिशाये

146.मानव आयु

147.औरतों का वर्ण धारण

148.ब्रह्मचर्य आश्रम

149.धरती सूर्य के साथ अनुसरण अनु भ्रमण गमन गति करती है

150.हाथी शिक्षा

151.कुँवा विद्या

152.वात पित्त कफ

153.गुरु कुल परीक्षा

154.विद्धुत विद्या

155.माली विद्या

156.पृथ्वी पर दिन रात किस प्रकार होता हैं

157.ऊषाकाल कि धूप औषधि होती है

158.कृषि खेती

159.माता पिता वृद्धों कि सेवा करो

160.आकाश अनंत है

161.प्राण

162.दूर संचार

163.वस्त्र बुनाई

164.सुखी जीवन कि कुंजी

165.युद्ध मे पापियों को मारने के लिए खंदक व गड्डे बनाना

166.द्विज (यज्ञोपवीत के बाद बालक ब्राह्मण कर्म से भी ब्राह्मण हो जाता है। इसलिए उन्हें 'द्विज' कहा जाता है)

167.संतान को माता पिता की सेवा करना चाहिए

168.छंद विद्या

169.वाणी के चार प्रकार

170.खेल-कूद

171.विमान विद्या

172.ध्वनि से तेज रफ्तार

173.गृहस्थ आभूषण पहन सकता है

174.अग्नि विद्युत से चलने वाले विमान

175.आचार्य (अध्यापक) के गुण कर्म

176.धरती गमनशील है

177.गोत्र

178.योग विद्या से ज्ञान लाभ

179.आँख से देखने पर सूर्य तारे पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण दिशाओ मे आते जाते है यह सत्य नहीं

180.कर्म स्वतंत्रता द्वारा दूसरे के कर्मों का भोग

181.मानसिक विकारों से मुक्ति

182.सामवेद गायन

183.शिक्षित मानव के गुण कर्म धर्म

184.घी त्वचा के लिए लाभदायक

185.कर्म बुद्धि युक्त हो

186.औषधि वनों कि रक्षा करो

187.उषाकाल सूर्योदय के समय उठना चाहिए

188.किसको गुरु बनाए

189.उत्तम हवन कर्ता कौन

190.वसु रुद्र, आदित्य देव

191.किसका प्रमाण मान्य है

192.सूर्य मे अग्नि विद्युत रूप है

193.देहिक वाचनिक मानसिक कर्म होते हैं

194.सूर्य गमनशील है

195.अग्निहोत्र मंत्र अर्थ के साथ करना चाहिए

196.अग्निहोत्र का समय

197.गुरु कौन है

198.विद्वानों कि निंदा हिंसा न करो

199.शत्रु दुष्ट अन्यायकारी

200.शहद

201.बुद्धि सर्वव्यापक है

202.ईश्वर आज्ञा अनुसार चलने वाला उपासक अपराजित होता है

203.जगत जीवन से रहस्य हेतु विद्वानों से प्रश्न-उत्तर करो

204.समाज मे उत्तम विद्वानों बुद्धिमानों कि प्रतिष्ठा करो

205.बिजली प्रकाश के माध्यम से अंतरिक्ष मे संदेश भेजना

206.क्षत्रीय गुण कर्म धर्म

207.ब्राह्मण गुण कर्म धर्म

208.शूद्र गुण कर्म धर्म

209.वैश्य गुण कर्म धर्म

210.माता पिता को बचपन मे ही बच्चों को संस्कार शिक्षा पाप कर्मों का ज्ञान देना चाहिए

211.सौरमंडल शिक्षा

212.सनातन धर्म

213.पहाड़ पर्वत निर्माण

214.नदियों के नामों का वैदेक अर्थ

215.विभिन्न नस्लों शारीरिक लक्षणों से युक्त मनुष्यों से समान बर्ताव करो

216.अच्छा देखो अच्छा सुनो

217.मनुष्य शरीर के विभिन्न अंगों का कार्य वर्णन

218.विद्वान मनुष्य के गुण कर्म

219.भूत शब्द के अर्थ का संबंध अनादि से है

220.व्यर्थ बकवास मत करो

221.हर बुराई को अपने से दूर रखो

ॐ

सनातन परिवार

सर्वाधिकार सुरक्षित

POSITIVE THOUGHT CENTER
57ए- महालक्ष्मी नगर इंदौर म.प्र.
जम्बू द्वीपे, भरत-खण्डे भारत
संपर्क. 9827050009
Email: hathyogi@positivethoughtcenter.com
https://positivethoughtcenter.com
मुफ़्त (FREE) सनातन पुस्तक ज्ञान संग्रह वेबसाईट

प्रकाशन वर्ष 2023
विक्रम संवत 2080

सकारात्मक विचार केंद्र

POSITIVE THOUGHT CENTER
https://positivethoughtcenter.com
Online मुफ्त सनातन पुस्तक ज्ञान संग्रह